राहुल गांधी व्याकुल मन का नायक

अपने समय के सवालों से टकराते
राहुल का एक जिद्दी अभियान
20 सालों से जारी है!
और अब
सामाजिक न्याय!!

लोकसभा चुनाव
'चेतावनी'
हरियाणा चुनाव
'सबक'
अब आगे...?

संजीव चंदन

कोमल मन राहुल गांधी भारत जोड़ो यात्रा के दो चरणों से
अपनी निरंतरता (?) साबित कर चुके थे! कोमल मन इसलिए कि
आप कल्पना कर सकते हैं कि इस देश की राजनीति ने
उनके जीवन के 14 से 20 साल के बीच उनकी दादी और
उनके पिता को छीन लिया था। अपने इन दो प्रिय लोगों की
नृशंस हत्या की मनोवैज्ञानिक छाप
राहुल गांधी के व्यक्तित्व पर साफ रही है।
कोमल मन कई बार व्याकुल हो उठता है,
कुछ समय द्वारा थोप दी गयी जिम्मेवारियों के कारण,
कुछ अपने 'जिद्दी चुनाव' के कारण।

The Marginalised Publication

₹ 190/-

ISBN- 978-81-977558-0-4

राहुल गांधी किस तरफ बढ़ रहे हैं, उनका लक्ष्य क्या है, उनके सलाहकार उन्हें क्या बनाना चाहते हैं और वे खुद क्या बनना चाहते हैं, हर जद्दोजहद का आकलन इस किताब में है। इसपर राहुल समर्थकों की और कांग्रेस की क्या प्रतिक्रिया होगी, कुछ कहा नहीं जा सकता, पर यह किताब राहुल की समग्र छवि को निहारने का एक आइना है। अब आपकी जो छवि गढ़ी जा रही है या बनती जा रही है, वही तो दिखाई देगी। इतर उनकी छवि को देखना चाहेगा तो मुश्किल होगी।

कांग्रेस पर कुछ दलित विरोधी, पिछड़ा वर्ग विरोधी होने के दाग-धब्बे लगे हैं। बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की उपेक्षा का आरोप भी कांग्रेस पर है, बाबूजी जगजीवन राम को प्रधानमंत्री न बनने देने का दोष भी कांग्रेस पर है। इन सबको भूल मानकर, घोषित कर राहुल गांधी को आगे बढ़ना होगा।

मुझे विश्वास है कि राहुल गांधी जनेऊ-जाति से मुक्त होकर 'निर्जात' राहुल गांधी के रूप में खड़े हों, इस जमीन पर खड़े होते हैं तो उनके साथ करोड़ो बहुजन साथ खड़े दिखाई देंगे। बुद्ध की भूमि पर ज्ञान का बीज पड़ा हुआ है, उसे खाद-पानी की जरूरत है। जो ऐसा कर पायेगा वह भारत के करोड़ो लोगों के दिल पर राज करेगा।

प्रो. कालीचरण स्नेही, (आलोचक, समाजशास्त्री)

व्याकुल मन तो मुझे राहुल कहीं से नहीं लगते। शौकिया राजनेता लगते हैं। थोड़ी बहुत इच्छा यह जरूर है कि बुद्धिमान नेता माने जाएं। जो कुछ व्याकुलता थी भी, वह नेता प्रतिपक्ष बनने के बाद समाप्त हो गई है। ऐसे में मैं उन्हें व्याकुल मन तो नहीं कहूंगा। बहरहाल संजीव जी ने जिस तरीके से सिलसिलेवार घटनाओं और राहुल का परिचय दिया है, वह नजरिया मेरा भी रहा है। इस तरह से इस पुस्तक के विचारों और विश्लेषणों से मुझे भी संबद्ध मान लिया जाए।

महेंद्र यादव, (पत्रकार)

संजीव चंदन एक राजनीतिक विश्लेषक और लोकतंत्र के चौथे स्तंभ वाली भूमिका में 'राहुल' की राजनीतिक यात्रा को सिलसिलेवार घटनाक्रमों के मार्फत देखते हैं- डोरली, जालना और भट्टा पारसौल, मंदिर, जनेऊ से लेकर सोशल

जस्टिस की मसीहाई की बात करने तक और इसके बीच राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी के तमाम अंतर्विरोध भी। किताब समग्रता में सेक्यूलर, लिबरल और प्रोग्रेसिव इंटेलिजेंसिया व नागरिक समाज को भी उन सवालों की ओर मुखातिब करती है, जो सामाजिक न्याय के कोर मुद्दों तथा दलितों, महिलाओं, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों के वास्तविक प्रतिनिधित्व के सवालों को दरकिनार कर राहुल गांधी और उनकी कांग्रेस को ही साम्प्रदायिकता और हिंदुत्व की राजनीति के एकमात्र विकल्प के तौर पर देखते हैं।

मनोरमा, (पत्रकार)

लिबरल लेबल वाले कुछ गिने-चुने मीडिया द्वारा और किसी एक राजनीतिक पक्ष की ओर झुके गैर राजनीतिक संगठन अथवा सिविल सोसायटी द्वारा राहुल गांधी और कांग्रेस के सामाजिक न्याय के एजेंडे को राजनीतिक पटल पर एक चमत्कारी ताबीज की तरह पेश करने के षडयंत्र की अच्छी खबर लेती है यह किताब। इस 'ताबीज' को पहनकर दलित और पिछड़ों के वोटों को हासिल करने की कवायद को किताब में उजागर किया गया है।

यूपीए काल के दौरान से ही राजनीतिक मंच पर अहम भूमिका में आने की राहुल गांधी की कोशिशें, सॉफ्ट हिंदुत्व के प्रदर्शन, भारत जोड़ो यात्रा के यश/अपयश का हिसाब और इंडिया एलायंस की स्थापना के बाद सत्ता पर काबिज होने में उसकी असफलता का अचूक विश्लेषण यहां तथ्यों के आधार पर किया गया है। फुले-शाहू-अम्बेडकर- अन्वेषण-पद्धति में राजनीतिक विश्लेषण का हिन्दी में यह पहला प्रयोग है।

जिन कूट प्रश्नों से परिवर्तनवादी और उदारमतवादी अबतक उलझ रहे, उसपर पड़ी धुंध को हटाने वाली है यह किताब। तथ्यों को बारीकी से पेश करने की लेखन शैली के साथ यह किताब चर्चित पत्रकार 'जनार्दन ठाकुर' की राजनीतिक किताबों की भी याद दिलाती है।

विजय सोनवणे, (वैज्ञानिक और अम्बेडकरी विश्लेषक)

राहुल गांधी
व्याकुल मन का नायक

संजीव चंदन

The Marginalised Publication

पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी तरह से इस्तेमाल
के लिए लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

प्रकाशक : द मार्जिनलाइज्ड पब्लिकेशन
28-एच, कृष्णा विहार, फेज-2, लोनी,
गाजियाबाद-201102 (उ.प्र.)
: सी-401, मंगलम विहार अपार्टमेंट,
आरा गार्डन रोड, पटना- 800014
: पंजीकृत कार्यालय, सानेवाड़ी, वर्धा
महाराष्ट्र- 442001
ईमेल : themarginalised@gmail.com
संपर्क : +91-8130284314
कॉपीराइट © : लेखक

प्रथम संस्करण : 2024
आवरण, लेआउट : साकिब अशरफी
मुद्रक : विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

ISBN : 978-81-977558-0-4

₹ : 190/-

RAHUL GANDHI : VYAKUL MAN KA NAYAK
by SANJEEV CHANDAN

प्रेरणा

महात्मा जोतिबा फुले-सावित्री बाई फुले और डॉ. अम्बेडकर की परंपरा, जिससे दृष्टि मिलती है किसी वक्त में प्रचलित नैरेटिव के पार देखने की और साहस मिलता है अपनी राह और मंजिल तय करने की जो राष्ट्रवाद को 'पेशवाई' प्रभाव से अलग 'भीमा कोरेगांव' की नजर अता करती है।

सोनिया गांधी को, जो भारतीय राजनीति की एक हासिल हैं तथा जो अपनी दृढ़ता के लिए जानी जाती हैं, जो भारतीय राजनीति पर हावी पितृसत्ता के निशाने पर रहीं और जो अंततः अपने ममत्व से स्वयं बिंधती गयीं।

अनुक्रम

1.	भूमिका	11
2.	आभार	23
3.	डोरली, जालना, भट्टा परसौल : राहुल गांधी की राजनीतिक प्रयोग-भूमि	26
4.	हिन्दुत्ववादी ब्राह्मणवाद का उभार और राहुल गांधी	30
5.	राहुल का जनेऊ, राहुल का गोत्र : ब्राह्मणवादी हिन्दुत्व की शरण में	38
6.	भारत जोड़ो यात्रा : छवि निर्माण परियोजना	43
7.	हिन्दी क्षेत्र की सिविल सोसाइटी	55
8.	इंडिया अलायंस और सामाजिक न्याय की अन्तः प्रेरणा	74
9.	सावधान! राहुल गांधी सामाजिक न्याय कर रहे हैं!	79
10.	बीच चुनाव में	87
11.	चुनाव के बाद	92

12. चुनाव परिणाम के आईने में राहुल गांधी और कांग्रेस 105
13. शिवभक्त राहुल : आरएसएस-बीजेपी का विकल्प बन पाएंगे? 109
14. सोनिया गांधी और राहुल : गणेश परिक्रमा ही रहस्य है 118
15. राहुल की कांग्रेस : चिराग तले अंधेरा 121
16. सिर मुड़ाते ही ओले पड़े : जम्मू-कश्मीर और हरियाणा चुनाव 126
17. निष्कर्ष : राहुल गांधी : 'व्याकुल मन' का नायक 132

परिशिष्ट

18. सोनिया प्रसंग पितृसत्ता का राग-विराग 140
18. हिन्दी साहित्य जगत का खम ठोक जातिवाद 150

भूमिका

4 जून, 2024 की सुबह 9 बजे। आम तौर पर चुनावी परिणाम देखना आंकड़ों के साथ घटती-बढ़ती उत्तेजना का प्रसंग होता है। मैं उस तरह उत्तेजित मन से परिणाम को नहीं देख रहा था, जैसा 2019 में। फरवरी 2024 में ही यह स्पष्ट हो गया था कि विपक्ष ने एक निश्चित जीत को संदेह में डाल दिया है।

यह चुनाव बेहद खास था। नरेंद्र मोदी की सरकार को 10 साल बाद मिल रहा जनादेश कई मायने में देश की दशा-दिशा तय करने वाला था। यह जनादेश वर्चस्ववादी साम्प्रदायिक विचारधारा के लिए होगा, हिन्दुत्व के बढ़ते आत्मविश्वास में इजाफा करेगा या यह जनादेश समावेशी धर्मनिरपेक्ष विचारधारा के लिए होगा और सामाजिक न्याय के आत्मविश्वास और कार्यक्रमों को गति देगा-यही यक्ष प्रश्न था। चुनाव के अंत-अंत तक एक फलसफा केंद्र में था कि नरेंद्र मोदी और भाजपा से जनता लड़ रही है।

फरवरी 2024 तक कम-से-कम यह तय था कि मोदी-अमितशाह के नेतृत्व में अगली सरकार नहीं बनेगी, बीजेपी भले ही बड़ी पार्टी होगी। स्थितियां उलट गयी थीं इंडिया गठबंधन की एक वर्चुअल बैठक में। 4 जून 2024 के परिणाम को लेकर हम तय थे कि 220 से 240 की संख्या के साथ भाजपा नंबर 1 पार्टी रहेगी। परिणाम यदि 220 या उससे नीचे होता है तो भाजपा की सरकार बनने के बावजूद देश का पीएम बदल जाएगा। अपने अनुमानों पर हमारे इत्मीनान का कारण था कि इस बार का चुनाव बेहद फ्लैट होता गया था। नरेंद्र मोदी और उनकी टीम द्वारा उनके पक्ष में पैदा किया गया मास हिस्ट्रिया कमजोर